प्रवचन स्वामी श्री विशेषानंद जी

बन्दंऊ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि। महा मोह तम पुंज जासू वचन रवि करनी कर।।
सर्व वेदान्त सिद्धान्त गोचर तम गोचरं। गोबिन्दं परमानन्दं सदगुरूतं प्रणतोऽस्मि।।
न कुछ किया न कर सकूं न कुछ करने योग।
जो कुछ किया सो आप किया, प्रभु आप ही करने योग।

प्रभु प्रेमी सज्जनों:— महापुरूषों ने कुछ ऐसे-ऐसे वचन सदग्रंथों में दिये कि जिनका सही या तात्विक पूरा अर्थ इतना ही है कि जीव किसी प्रकार से अपने ऊपर एक चोट अपने ऊपर कोई ऐसी बात अपने मन पर कोई ऐसी मार ले जाये जिसे ज्यादा नहीं तो कम से कम उसे भजन करने की प्रेरणा या भजन करने का कारण मिल जाये। वो बातें वो शब्द दोहे, चौपाईयां, श्लोक जितना कुछ भी महापुरूषों ने कहा वो कोई सोचा समझा हुआ नहीं कोई विचारकर कहा हुआ नहीं। वो तो ऐसे है कि चलते-चलते अपने ध्यान में मग्न अवस्था में जो आ गया सो वचन उन्होंने अन्तरात्मा से गा दिये पर हे प्रेमी! उसमें से भी विचारणीय बात कि जो कुछ उन महापुरूषों ने गाया वो परम सत्त परम सात्विक परिपूर्ण लेकिन उसे समझने के लिए बुद्धि भी उन महापुरूषों जैसी रखनी पड़ेगी। हे प्रेमी! जिस बुद्धि में इधर उधर के ख्याल, लोगों की बातें, कुछ द्वेष, कुछ घृणा, कुछ ऐसा ऊट पटांग कई कुछ बैठा हो यदि उसमें कहोगे कि अब सत्संग भी टिक जाए तो संभव नहीं।

तीन चीज़ें महापुरूषों ने सम्पत्ती करके कही सेवा, सत्संग, भजन। यदि विचार करें तो यह तीनों ही एक रस एक रूप हैं परन्तु क्रियान्वित करने के लिए इन तीन चीजों को समझने के लिए महापुरूषों ने इनके तीन भाग किये। पहला सेवा, दूसरा सत्संग, तीसरा भजन। है तो यह तीनों ही एक उस परम परमात्मा के स्वरूप उस एक को ही तीन स्वरूपों में महापुरूषों ने प्रस्तुत किया।

इतिहास में आप पढ़ोगे कुछ-कुछ भक्त ऐसे हैं कि उनके जीवन में सेवा का बहुत वर्णन जिन्होंने अटूट मन मारकर सेवा करी उनके जीवन में ऐसा वर्णन बहुत कम मिलता कि वो कभी बैठक में उतरे हों या उनके जीवन में कोई सत्संग के लिए स्थान रहा हो जब भी उनका लिखित जीवन पढ़ोगे तो उसमें सेवा का बहुत वर्णन आता अब हे प्रेमी यह वो भक्त थे जिन्होंने परमात्मा को सेवा स्वरूप में पाया ऐसे ही कुछ थे जिन्होंने सत्संग स्वरूप में पाया।

कभी आप ग्रंथों में पढ़ते हैं ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्र सनत सनन्दन सनत कुमार और सनकादिक इन चारों का जहां भी वर्णन हो इनके जीवन में एक चीज़ रहती है सत्संग इन्हें वरदान है कि इनकी उम्र कितनी भी बढ़ जाये परन्तु इनकी अवस्था एक पांच साल के बच्चे की ही रहती है बढ़ती नहीं और यह जहां भी चाहें अपने मानसिक स्वरूप में उपस्थित हो जाएं क्या है यह। हे प्रेमी यह है सत्संग का वरदान एक यह भरपूर वरदान है सत्संग का कैसा वरदान कि जिसे हर समय सत्संग ही चाहिए उसे कुछ इधर का लेना नहीं कुछ उधर का लेना नहीं केवल एक सत्संग यह वो भक्त हुए जिन्होंने ईश्वर को सत्संग के स्वरूप में पाया तीसरे वो हैं जिन्होंने भजन के ध्यान के एकाग्रता के माध्यम से पाया। है तो बिल्कुल एक चीज़ है तो सेवा

करो नब्ज भी नहीं धड़कन भी नहीं 54-55 साल हो गये वैज्ञानिक हैरान हैं। उसे कैमरे लगाकर आज भी रखा गया चैक किया जाता कि कहीं कुछ खाता तो नहीं पर खाने का सवाल ही नहीं।

हे प्रेमी! उस योग से भी ऊपर है गुरू महाराज जी का ज्ञान। जब योग विद्या ही विज्ञान को मात दे गई तो नाम की तो बात ही अलग है। विज्ञान ने परिभाषा यह दी थी कि जिसकी नब्ज बन्द हो जाए धड़कन बन्द हो जाए वह मृतक है पर हे प्रेमी! होता क्या है उन क्रियाओं से भी यह संभव है कि धड़कन रूक जाए यह कोई बड़ी बात नहीं। सही अर्थों में मृत्यु क्या है, जिस समय प्राण तेरे हाथ से छूटे ज्यों ही प्राण छूटे बस उसके बाद फिर तुझे जीवित में नहीं गिना गया और तब तक जीवित है जब तक एक भी प्राण बाकी है। जब तक एक भी प्राण चाहे रोका हो कोई बात नहीं और दूसरी बात मृत्यु कब गिनी जाती जब स्वांस बाहर आया। अन्दर गये स्वांस को जीवन कहा गया बाहर जाते स्वांस को मृत्यु कहा गया।

ग्रंथों में लिखा है कि जीवन तो अपने आप में है ही कुछ नहीं यहां तो जो दिखता जन्म मरण का खेल है। क्या है वो जन्म मरण का खेल। स्वांस अन्दर चला गया जन्म है बाहर चला गया मौत है इसीलिए व्यक्ति बार-बार जीता है, मरता है। हर स्वांस में जन्म है, हर स्वांस में मरण है। यह है इसका अर्थ और उसी जन्मते और मरते स्वांस में नाम है। जिसने तो स्वांस लिया निकाल दिया उसके लिए तो हे प्रेमी! हवा का झोंका ही रह गया, आ गया और बस खत्म पर जिसने स्वांस में अपने आप को एकाग्र कर लिया उसने दुनिया की सबसे बड़ी सम्पती वहां प्राप्त कर ली। उसने दुनिया का सार वहां पर प्राप्त कर लिया उसे अब कुछ पाने योग्य बाकी नहीं।

जहां भगवान गीता में कहते हैं हे अर्जुन! जो मुझे तत्व से जान लेता है फिर उसे कुछ जानना बाकी नहीं इसका अर्थ क्या है तत्व से जान लेना अर्थात कि एक तो भगवान की महिमा उसके गुणों को जानना और दूसरा है जो तेरे प्राणों में बैठा उसे जानना। जब तूने प्राणाधार को जान लिया प्राणों में बैठी हस्ती को जान लिया तब सब कुछ जाना गया सम्पूर्ण जाना गया उस समय और हे प्रेमी! उसके बाद क्यों कुछ जानना बाकी नहीं यह नहीं कि वहां सारी जानकारी आ गयी दरअसल वहां जानने की फिर लालसा नहीं, लालसा खत्म हो गयी।

गुरू महाराज ने रोग नहीं खत्म किया। रोग की जड़ खत्म की। रोग यह था कि कई कुछ देखने को चित्त था। पर क्यों था चित्त? उस ''क्यों'' को गुरू महाराज जी ने खत्म किया। ज्यों ही नाम की सुध आई जिसके भीतर नाम प्रकट हुआ उसकी सबसे पहले वासना खत्म हुई कि कुछ चाहिए और क्यों चाहिए। वो वासना उड़ गई वो लालसा खत्म हो गयी जो कहती थी हां कुछ और। अभी कुछ और वो लालसा उड़ गयी। ज्यों ही लालसा उड़ी हे प्रेमी! त्यों ही नाम की समझ गहरी हुई और जब तक कुछ लालसा है तब तक नाम की भी समझ आती नहीं। चाहे कुछ कर लो प्रयास नाम की समझ तब तक नहीं।

नाम की समझ उस समय खड़ी होती जिस समय लालसा हीन हुए। जिसके चित्त में पहले ही कुछ विचार कुछ मांगे हों या ऐसा समझें कि कोई व्यक्ति किसी मन्दिर में, किसी मस्जिद में धन मांगने बैठा प्रार्थना करने बैठा माथे रगड़ रहा कि हे प्रभु! धन चाहिए-धन चाहिए। ऐसे व्यक्ति को ऐसे धन मांगने वाले को तू जाकर उठाए कि चल छोड़ आजा तुझे भजन की बात बताऊं। वो क्या कहेगा कि चल-चल तूं ही कर भजन। उसे कुछ लेना देना नहीं। उसके लिए सार है धन उसको सार है कि जो मांग रहा हूं उसको

टेवल पर तीन चार दिन पड़ा रहा जब पत्नि ने कुछ बोलना शुरू किया तो पति तरीके से उठा सुनते-सुनते जैसे पानी पीने लगा गिलास हाथ से गिरा दिया अब बूढ़ों को नींद तो वैसे ही नहीं आती। बूढ़ा आदमी आकर खड़ा हो गया कि इशारा मिल गया। सुनने लगा सुनता रहा, सुनता-रहा, दरबाजा खड़खड़ाया तो बहु एक दम से चुप। दरवाज़ा खोला कहता नहीं-नहीं पुत बोल-बोल बोल क्या बोलदी नहीं-नहीं ऐसे नहीं ऐसे नहीं। लड़का कहता जी मैं बड़ा दुखी हूं इसको तो हर समय झगड़ा चाहिए तो पिता ने एक बात कही वो बात आर०सी०टी से सम्बन्धित है मेरे ख्याल में डाक्टरों को तरीका भी वहीं से आया होगा पिता ने कहा कहता रोज दी टाऊं टाऊं नालों नस बड़ढ ऐहदी।

अब हे प्रेमी! नस काटने का अर्थ कि जहां से यह Charge होती इसकी Charging बन्द कर पहले। अब Charging क्या थी Charging यह थी कि मां ने हमेशा यह कहना कि बेटी बड़ों को मिल गया तुझे नहीं मिला बस छोटे को मिल गया तुझे नहीं मिला तो हे प्रेमी ऐसे आर०सी०टी दुनियां में भी करनी पड़ती और डाक्टर भी करते हैं। गुरू महाराज भी करते हैं। गुरू महाराज ऐसे करते हैं कि जब लोग कहते मैं दुखी-दुखी गुरू महाराज कहते दुख दूर मत कर अनुभव को बदल उस आभास को बदल जो आभास हमें दुखी करता है। मान लीजिए पड़ोसी ने अच्छा मकान बनाया कोई अच्छी गाड़ी ली कुछ भी लिया। यदि तेरे स्वभाव में ईर्ष्या है तो वो चीज़ तुझे दुख देगी कि इस के पास है, मेरे पास क्यों नहीं यह मुसीबत आयेगी ही आयेगी और ऊपर से नहीं हे प्रेमी! भीतर से है। **गुरू महाराज देते हैं समझ कि उस के पास है तूं अपना काम कर गुरू महाराज का काम है तुझे बार-बार लौटाकर तेरे में लाना। इसे कहते हैं आर०सी०टी कि जो तुझे नस दर्द करती थी वो काट देनी**। हे प्रेमी! जब तक तूं अन्दर से समझ पैदा न करे दुख दूर नहीं होते चाहे कुछ मर्जी कर लें। क्यों कबीर साहिब ने कहा था:-

जब आवे सन्तोष धन सब धन धूली समान।

उस का अर्थ क्या है हे प्रेमी उस का अर्थ यह नहीं कि तूं धक्के से संतोष करे न तेरे प्राणों में सन्तुष्टि मट्टी का अर्थ कि धन की कीमत तेरे चित्त से खत्म हो गयी। अब वो धन, धन नहीं है, है सामने दिखता है सोना, चांदी, सिक्के सब कुछ पर उसकी कीमत धन की तरह नहीं। महांपुरूषों ने दो तरीके बताये एक तरीका है धन को धन की दृष्टि से देखना, एक तरीका है धन को लक्ष्मी की या लड़की की दृष्टि से देखना। लड़की की दृष्टि का अर्थ है कि जिसके घर में पुत्री हो वो उसे पालता पोसता नहलाता खिलाता सब कुछ करता है पर एक धारणा मन में रख के कि यह किसी और के घर में जायेगी। उसकी टोटल धारणा यह है कि मैं इसे जो भी देता हूं यह मेरी नहीं। दूसरी तरफ धारणा पुत्र के प्रति कितना भी नखट्टू हो पर पता अपना ही है यह हीरा। कहीं नहीं जाएगा इसके ग्राहक हम ही हैं।

तो हे प्रेमी! यह मोल का अन्तर है, चित्त का अन्तर। लड़की कितनी गुणवान हो पढ़ी लिखी कुछ हो पर एक धारणा अन्दर है कि यह एक दिन जाएगी। ऐसे ही धन का यहां तक सन्तोष के साथ सम्बन्ध है ज्यों ही अन्दर सन्तोष आया तो भावना लड़की की तरह हो गई कि है मेरा पर मेरे पास रहेगा नहीं और जो जाने पर दुख होगा वो उसको आज अनुभव करता कि चले भी गया कोई बात नहीं चले गया का अर्थ यह नहीं कि उठकर लुटा देगा कहीं गवायेगा कहीं शराबें पीयेगा पर अन्दर से तैयारी है कि कुछ हो भी गया कोई बात नहीं।

हे प्रेमी! ज्ञानवान का अर्थ यही है भविष्य के लिए तैयार होना। कुछ हो जाए उस के लिए पहले ही

ब्रह्मज्ञानी मैं सर्वसमर्थ हूं बस और कुछ नहीं चाहिए।

जैसे जिन दिनों भारत वर्ष में अंग्रेज़ी का प्रचलन नहीं था सिर्फ संस्कृत और हिन्दी का ही ज्यादा ज़ोर था तो धीरे-धीरे भारतवर्ष में अंग्रेज़ी आनी शुरू हुई। अब अंग्रेज़ी उस समय इतनी विकसित भी नहीं थी बहुत शब्दों की भारत के हिसाब से कमी थी। कमी भी कैसी थी कि अंग्रेज़ सन 1895 के करीब-करीब कहीं जम्मू या हिमाचल की तरफ कहीं पहाड़ों पर गये होंगे तो निकल गये जैसे भूंड भांड़ ऐसे गावों हैं उधर निकल गये कितने दिन का सफर करके।

अब उन गांवों का कोई एक लड़का इधऱ रह कर गया होगा किसी साफ सुथरे Area (क्षेत्र) में उसने वहां पर अंग्रेजी में नरसरी या एल०के०जी कर ली एक दो साल लगाए तो उसे A B C पूरी आती थी। वो लौट आया था गांव में। जब गांव में अंग्रेज आये तो अंग्रेज अब कहें वाटर अर्थात पानी चाहिए पानी दो। अब वो सारे इकट्ठे हो गये।

होता क्या था कि अंग्रेज कभी कभार कोई ऐसी गाड़ी ले जाते थे जिसके लम्बे लम्बे नाक जैसे इंजन होते थे पुरानी अंग्रेजों की गाड़ियां देखी होंगी आपने आगे एक गाड़ी है उसमें कोई एक साहब बैठे होंगे और पीछे होते थे घोड़े वाले। जैसे ही जाकर गाड़ी खड़ी हुई एक बुढ़िया ने लाकर चारा ड़ाल दिया गाड़ी के आगे, एक पानी की बाल्टी ले आई कि अभी यह कुछ खायेगी। चारा भी अच्छा खासा कि घोड़ा छोटा होता है तो इतना खायेगा। गाड़ी बड़ी है काफी चारा डाल दिया तो वो लोग अंग्रेज को ऐसे छू छू कर देखें कि हैं इन्सान ही हैं यह गोरे-गोरे एक तो बहुत चिट्टे बग्गे वो। इधर हिन्दुस्तानी तो ठीक ही थे बेचारे।

तो अंग्रेज अब कहें वॉटर वॉटर कि पानी, पर वहां समझ किसको आये तब क्या हुआ कि होगा कोई उनमें बुजूर्ग तो उसने कहा कि फलां आदमी का लड़का पढ़ा लिखा है वो पढ़कर आया है अंग्रेजी। उसको बुलाओ अब इंगलिश वाले को बुलाया गया। उसने भी, था तो छोटा ही, अंग्रेजो को ऐसे देखा बड़े गौर से। अब पीछे से हल्ला शेरी जैसे वो होता कि किसी गांव में माडू (कमज़ोर) पहलवान होता है तो अब माडू लड़ना तो न चाहे पर गांव की इज्जत के लिए गांव वाले हल्ला देते चल-चल लड़।

वहां भी कुछ ऐसा हो गया। कहते बोल तूं भी बोल अब अंग्रेज कहते हैं water मांगते वैचारे पानी। इधर यह कहते तूं भी हमला कर। वो कहता A for apple, एप्पल माने सेब वो अपना शुरू हो गया वो फिर कहें water Please water यह कहे c for cat, cat माने बिल्ली बस इसने अपनी a to z सुनाई। जब उनकी नहीं बात बनी तो उन्होंने कहा कि so silly person। बड़े बेवकूफ हैं वो चल दिये जाकर लग गये कोई छप्पड़ इत्यादि ढूंढने यहां बेचारों ने टाईम पास किया होगा। तो हे प्रेमी! ऐसा ही हाल था शुरू शुरू में जब अंग्रजी आई तो उन दिनों में शब्दार्थ भी भारतीयों को पूरे नहीं पता थे यह फलों के नाम बगैरह-बगैरह भी पूरा चला नहीं था।

तो किसी बच्चे ने अपने अध्यापक के आगे एक प्रश्न कर दिया। प्रश्न भी कैसा कि मैं यदि आप से पूछूं तो सम्भवत: आप भी क्या बताओगे। राम आम खाता है। यदि मैं आपको पूछूं कि बताओ इसकी इंगलिश क्या लिखोगे तो आम तौर आदमी क्या कहता है Ram eats the mango। यह है साधारण अर्थ जो आप समझते हैं। पर अध्यापक ने तब क्या बताया Ram is general account। general मतलब आम खाता account। क्योंकि mango का तो तब पता ही नहीं होता था।

यह उन दिनों की इंगलिश थी उसके बाद एक हमारे पास मध्यम काल आता है जिस टाईम को

ढूंढा। तो लिखी तो किसी ने कल्पना पर आधारित पर मैं तथ्य की बात लेता हूं बहुत ही मजबूत दृढ़ बात। क्या ? कि हे प्रेमी ! शक्ति तेरे भीतर है

तेरा सांई तुझ में जाग सके तो जाग।

तेरे भीतर तेरी चीज़ है और तूं ढूंढता किसी स्थान पर कभी गुरूओं से पीरों सिद्धों से कभी चादरें चढ़ाकर कभी माथे टेककर। हे प्रेमी ! किस किस से ढूंढता तेरा सांई तुझ में। तुझ में पर अब जो तुझ में है वो पकड़ में कैसे आये हे प्रेमी ! उसका थोड़ा सा अभ्यास रख। चाहे छोटा सा ही कर पर कर। क्योंकि भजन का काम बिना श्रद्धा के नहीं होगा जब तक तेरी भजन में श्रद्धा नहीं तब तक स्थिरता नहीं बनेगी जब तक स्थिरता न बने तब तक समझ में नहीं आयेगा। एक प्रेमी ने मुझे कल बताया कि जी पहले तो मेरा ध्यान का कोई समय नहीं था। बैठना तो जरूर पर आगे पीछे या कभी ध्यान नहीं टिकना पर अब कहते तीन चार दिन पहले जब टिका तो मुझे डर बहुत लगा।

हे प्रेमी ! ध्यान की पहली शुरूआत ही डर है पर डर किसे ? जिसने ध्यान को डर के तरीके से लेना कि हैं पता नहीं क्या हो जायेगा और वही ध्यान उनके लिए खुराक जिन्होंने खोजना कि कुछ स्थिरता हो जाए। जिसने खोजना कि कुछ धारणा बन जाए हे प्रेमी ! यह तो भीतर की श्रद्धा का सवाल है यह तो तेरी अन्दर की श्रद्धा है।

ध्यान का अपना ही एक आनन्द है यदि तुझे स्नान करना आ जाए ध्यान में बाहर चमड़ा धोने का नहीं अन्दर ध्यान स्नान की बात करता हूं। यदि ध्यान में एक स्नान करना आ जाए और दूसरी तरफ दुनिया में जीना भी आ जाए निर्लेप होकर। जो कुछ घर के जरूरी काम काज थे निपटाए निपटाकर शान्ति पूर्वक बैठ जा। बिल्कुल शान्त होकर बैठ 10-20 स्वांस लम्बे गहरे ले प्राणों की हवा बरावर होने दे बस। उसके बाद शान्त हो पर हे प्रेमी ! बात वही आ गयी।

पंजाबी बुढ़िया के बारे में गुरू महाराज सुनाया करते थे कि उसको बोलने की आदत थी। लोग कहते चुप रह कहती मैं ता रह लूं एह जल जाणी जीभ नहीं रहिंदी। हे प्रेमी ! बात तो वही आ गयी अब जीभ भी तेरी ही है। अब चाहे जलजाणी कह चाहे कुछ कह चुप रखेगा तो धारणा बनेगी चुप रहेगा तो स्थिरता बनेगी। नहीं रहेगा तो हे प्रेमी ! समय तो निकलता जा ही रहा। आज थोड़ा गवाया कल को और और और और..... ऐसे गवाते-गवाते बिल्कुल जीरो पर आ गये। उस दिन फिर आती है गुरू महाराज जी की याद। जब कुछ नहीं रह गया तो प्रार्थना हे गुरू महाराज रक्षा करो अब हे प्रेमी ! कौन करे रक्षा वहां पर सारा जीवन गुरू महाराज यही समझाते रहे कि मैं रक्षा तो करूं पर तूं कुछ कर। वो तो नहीं माना अब जब आज्ञा न मानी तो बना कुछ नहीं तब समस्या ही समस्या थी कि इसलिए टाईम नहीं उसलिए टाईम नहीं। यह हो गया वो हो गया अब हे प्रेमी ! जब तूं प्रार्थना करे फिर तब सुने कौन।

सुख में सुमिरण न किया दुख में करे जो याद।
कहे कबीर ता दास की कौन सुने फरियाद।।

कौन सुने फरियाद अब फरियाद इसलिए नहीं कि सुनते नहीं। हे प्रेमी ! दरअसल तब फरियाद होती ही नहीं दुख में कभी ध्यान रखना फरियाद नहीं है। दुख में तो तराजू पकड़ी होती हाथ में कि हे गुरू महाराज तूं मेरा यह दुख दूर कर मैं तुझे यह दूं। तूं मेरा यह कर मैं तुझे यह दूं। तराजू है। फरियाद का अर्थ होता कि चाहिए ही कुछ नहीं बस तूं ही तूं और कुछ नहीं। दुख में समझौता है दुकानदारी होती है तूं मेरा इतना कर दे मैं तुझे यह चढ़ा दूं। तूं फोड़े हटादे तुझे झाड़ू चढ़ा दूं नमक चढ़ा दूं। पीपा घी का चढ़ा दूं फिर तो यह है।

वो फिर यदि कोई समझाए कहते गुरू महाराज को पता ही है। हे प्रेमी! गुरू महाराज को पता है, तो ही तो सैकिंड संडे तुम्हें बुलाते हैं। ना पता हो तो तुम्हारे ऊपर विश्वास कर लें कि यह तो बड़े पहुंचे हुए हैं। पर पता ही है कि बुलाना ही पड़ेगा और तू भी कोशिश करके पहुंचता ही रहना क्योंकि कहीं ब्रह्मज्ञानी का कीड़ा लग गया तो काम खराब हो गया बस। यह मैं इसलिए कहता हूं हे प्रेमी! जीवन में तुम धन के विषय में एक चीज़ जानते हो, सम्पति जितनी आ जाए उतनी थोड़ी। कहावत है आये हो तो क्या लेकर आए जाओगे तो क्या देकर जाओगे।

यह जोड़ने की कला है कि लाए जाओ धरे जाओ ऐसे ही तू सुमिरण के मसले में देख लाए जाओ धरे जाओ अर्थात हर स्वांस सम्भाल। कोई भी स्वांस तेरा परमात्म भजन के बिना न जाए। हर स्वांस को पूछ आए हो तो क्या लेकर आए जाओगे तो क्या देकर जाओगे अर्थात हर स्वांस में सुमिरण हो जाए। यह धारणा ऐसे बनाओगे तो सम्भव है। हे प्रेमी! एक आध दिन का सवाल नहीं क्योंकि सुमिरण एक आध दिन में समझ में भी नहीं आता जिस प्रेमी की मैंने बात बताई उसने कहा जी जब ध्यान लगा तो फिर डर लगा आंखे खोल दी। हे प्रेमी! बात तो फिर वहीं आ गयी कि बैठे थे या न बैठे थे काम बराबर। क्यों बराबर? क्योंकि गुरू महाराज का एक वचन भुला दिया कि कितना भी डर लग जाए तू नेत्र मत खोल क्योंकि हे प्रेमी! तू सिद्धि तो करने बैठा नहीं कोई काली चंडी चड़ालका तो करने बैठे नहीं कि कोई देवी आयेगी डरायेगी और कभी भी ध्यान में जिस समय डर लगता तो किससे अपने आप से। क्यों?

हे प्रेमी! वो फिर नारद ऋषि वाला दृष्टांत आ जाता कि शिवजी के गण बैठे थे उनको तो हंसे जाएं। जब विवाह में पहुंचे थे विश्वमोहिनी स्वयंवर में। गण बैठे तो गणों ने कहा कि कहते अपना मुंह देख बंदर जैसा मुंह कहते तू हमारे ऊपर हंसता अपनी शक्ल देख। अपना पता नहीं तो हे प्रेमी! दुनिया में डर नहीं लगता। ध्यान का अर्थ शीशा है इसने तुझे अपना आप दिखा देना इसिलिए जब भी कोई व्यक्ति ध्यानवास्थित होना शुरू होता है। उसे पहले अपने कुकर्म याद आते। उसको अपना आपा याद आता तो ध्यान से हटकर प्रायश्चित शुरू हो जाते वहां पर। ज्यादा तर सज्जणों का ध्यान इसलिए नहीं टिकता क्योंकि वहां प्रायश्चित बीच में आ जाता। गल्तियां करी हैं सुप्त मन में पड़ी हैं। जमा होए जा रही होए जा रही। ज्यों ही नेत्र बन्द हुए एकाग्रता हुई Files खुल गई। फिर वहां ध्यान नहीं फिर वहां प्रार्थना होती है हे गुरू महाराज मैंने यह किया, मैंने यह किया मेरे को क्षमा करो। पहले वैसे ही भजन नहीं बनता अब प्रायश्चित में नहीं बनता। भजन बनता ही नहीं। भजन दोनों तरफ से जाता लगा।

पर हे प्रेमी! इसकी एक युक्ति बता देता हूं दिन के दो समय निकाल लेना महिलाओं को अक्सर गुरू महाराज ने बताया भी था सुबह जब रसोई में तुम्हारा पहला कदम पड़े। एक तो जाओ सुचमता पवित्रता पूर्वक। आजकल की सुचमता का अंग्रेजी में नाम है Bed-टी उठते ही न मुंह धोवो न दांत। घुस जाओ रसोई में बस बनाओ फटाफट कोई ब्रश नहीं करना ऐसे ही पी जाओ। क्यों? Scientific जो हो गये। कहते लार में अट्ठारह तरह के अपने किटाणु हैं अन्दर के रोगों का खात्मा करते हैं पर ध्यान रखना लार तभी दवाई है यदि अन्दर चली जाए तो जहर है।

ये ध्यान रखना अन्दर लेने के इसके कुछ नियम हैं कि कब लेनी चाहिए वो भी है पर चाए के साथ तो Proper ज़हर है। पर अब अडवांस इंगलिश है आम खाता तो नहीं तो पढ़े लिखे हैं इसलिए चाए के साथ लार भी निगल लेते हैं। हे प्रेमी! कम से कम

गंदगी पड़ जाती सफाई कर दे। जो दरबार में रहते हैं उनसे पूछ ले सेवा कभी खत्म नहीं होती।

हां भाव का सवाल है भाव से कर गया तो सेवा है मजबूरी में कर गया वो नहीं, मजबूरी में कर गया तो सिर्फ वो क्या हो गया वो जिसे हम कहते हैं दिहाड़ी वो दिहाड़ीदार है, उससे ज्यादा नहीं। सेवा का अर्थ श्रद्धा से है और जितनी देर सेवा में है उतनी देर जीभ बन्द। मन अंदर जीभ को बोलने का काम नही मनी राम अन्दर बैठा रहे। तो हे प्रेमी यह तो था सन्देश समझ लेना विचार लेना भजन करने की लालसा होगी तो युक्ति को अपना भी लेना। नहीं होगी तो हे प्रेमी! जीवन कटता जा रहा जब फिर कोई ऐसा समय आता तो कह लेता गुरू महाराज पर वहां रक्षा नहीं क्योंकि रक्षा तब है यदि आज अपना आपा सम्भाले। यदि आज ही समय नहीं सम्भाला तो फिर वहां पर रक्षा नहीं।

❖❖❖❖❖❖

ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਣ ਭਗਤ

ਸੁੰਦਰ ਸ਼ਹਿਰ ਅਪਸਰਾਂ ਪੁਰੀ ਕੋਲੋਂ, ਮਾਤ ਲੋਕ ਉਤੇ ਸਿਆਲਕੋਟ ਆਹਾ।
ਲਗੇ ਬਾਗ ਬਹਿਸ਼ਤ ਦੇ ਵਾਂਗ ਗਿਰਦੇ, ਨਹਿਰ ਸ਼ਹਿਰ ਦੇ ਫਿਰ ਚੌਕੋਟ ਆਹਾ।
ਕਰੇ ਰਾਜ ਸਲਵਾਨ ਭਗਵਾਨ ਮੂਰਤ, ਨਮਸਕਾਰ ਜਿਸ ਨੂੰ ਕੋਟ-ਕੋਟ ਆਹਾ।
ਪੁੰਜ ਦਯਾ ਦਾ ਸਖੀ ਭਜਨੀਕ ਭਾਰਾ, ਰਿਦਾ ਸ਼ੁੱਧ ਨ ਰਖਦਾ ਖੋਟ ਆਹਾ।
ਪੰਜੇ ਚੋਰ ਨ ਭੁਲ ਕੇ ਕਰਨ ਫੇਰਾ, ਕਾਇਆ ਨਗਰ ਧਰਮ ਦਾ ਕੋਟ ਆਹਾ।
ਪਰ ਧਨ ਵੇਖ ਪਰ ਸਤ੍ਰੀ ਖੌਫ ਖਾਏ, ਬਧਾ ਸਿਦਕ ਦਾ ਜਤੀ ਲੰਗੋਟ ਆਹਾ।
ਪਏ ਭੰਗ ਨ ਯਾਰ ਦੀ ਵਿੱਚ ਯਾਰੀ, ਪੀਏ ਭੰਗ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਘੋਟ ਆਹਾ।
ਪਾਸੇ ਜੰਗ ਤੇ ਅਦਲ ਦੀ ਖੇਡ ਖੇਡੇ, ਬਾਜੀ ਸਚ ਸੰਤੋਖ ਦੀ ਗੋਟ ਆਹਾ।
ਹਰਨ ਡਰਨ ਨ ਸ਼ੇਰ ਬਘੇਲਿਆਂ ਥੀਂ, ਰਖੇ ਬਾਜ ਤੋਂ ਖੌਫ ਨ ਬੋਟ ਆਹਾ।
ਦੌਲਤਮੰਦ ਗਰੀਬ ਨੂੰ ਇਕ ਜਾਣੇ, ਉਪਰ ਕਿਸੇ ਦੇ ਕਰੇ ਨ ਚੋਟ ਆਹਾ।
ਰਲ ਖਾਂਵਦਾ ਕੁਲ ਗਰੀਬ ਗੁਰਬਾ, ਦੇਵੇ ਰਿਜ਼ਕ ਦੀ ਕਿਸੇ ਨ ਤੋਟ ਆਹਾ।
ਦਾਨਾ ਪਾਂਵਦਾ ਉਡਦਿਆਂ ਪੰਛੀਆਂ ਨੂੰ, ਖਾਲੀ ਰਹੇ ਨ ਕਿਸੇ ਦੀ ਪੋਟ ਆਹਾ।
ਹੋ ਕੇ ਫੀਲ ਸਵਾਰ ਰੂਪਏ ਮੋਹਰਾਂ, ਕਰੇ ਰੋਜ਼ ਸਵੇਰ ਨੂੰ ਸੋਟ ਆਹਾ।
ਗਿਆਨਵਾਨ ਤੇ ਗੁਣਾਂ ਦੀ ਖਾਨ ਰਾਜਾ, ਦਯਾਵਾਨ ਭਗਵਾਨ ਦੀ ਔਟ ਆਹਾ।
ਘਰੀਂ ਬੈਠ ਅਦਾਲਤਾਂ ਲੋਕ ਕਰਦੇ, ਜਾਏ ਜਰਾ ਨ ਬਾਹਰ ਰਪੋਟ ਆਹਾ।
ਬੱਧੇ ਸੁਖਣ ਦੇ ਲੋਕ ਇਤਬਾਰ ਵਾਲੇ, ਨਾਵਾਂ ਵਹੀ ਨ ਹੁੰਡੀਆਂ ਨੋਟ ਆਹਾ।
ਸ਼ਹਿਰ ਹਿਰਸਦੇ ਫਿਕ੍ਰ ਬਜ਼ਾਰ ਅੰਦਰ, ਰਿਹਾ ਵਿੱਚ ਦਲੀਲ ਦੇ ਲੌਟ ਆਹਾ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਪਰ ਵਿੱਚ ਗ੍ਰਿਹਸੱਤ ਆਸ਼੍ਰਮ, ਨਹੀਂ ਬਿਨਾਂ ਸੰਤਾਨ ਦੇ ਛੋਟ ਆਹਾ।
ਪਈ ਰਾਤ ਸਲਵਾਨ ਨੂੰ ਸੁਪਨ ਆਇਆ, ਦਰਸ਼ਨ ਰੂਪ ਨ ਰੈਣ ਦਾ ਪਾਇਆ ਈ।
ਗਦਾ ਪਦਮ ਹੱਥ ਪਕੜਿਆ ਸੰਖ ਚਕ੍ਰ, ਕੀਟੀ ਮੁਕਟ ਸਿਰ ਜੜਤ ਜੜਾਇਆ ਈ।
ਸਰਬ ਕਲਾ ਸਮਰਥ ਅਕਾਲ ਮੂਰਤ, ਜਿਸ ਨੂੰ ਵੇਦ ਅਭੇਦ ਬਤਾਇਆ ਈ।
ਖੜੀ ਸਾਹਮਣੇ ਚਤੁਰਭੁਜ ਮੂਰਤੀ ਜੀ, ਜਗਮਗ ਜੋਤ ਪ੍ਰਕਾਸ ਦਿਖਾਇਆ ਈ।
ਹੱਥ ਜੋੜ ਕੇ ਉਸਤਤੀ ਕਰੇ ਮੁੰਹੋਂ, ਚਰਣ ਚੁੰਮ ਕੇ ਸੀਸ ਨਿਵਾਇਆ ਈ।

ਬਾਕੀ ਸਫਾ 16 ਤੇ.....

take a bath. Devadatta also rose from his couch and placed both his feet on the ground. Immediately, his feet sank into the earth and he was gradually swallowed up, Devadatta did not have the opportunity to see the Buddha because of the wicked deeds he had done to the Buddha. After his death, he was reborn in Avici Niraya, a place of intense and continuous torment.

कर्म गति टारे नहिं टरे

To be Cont.....

ਸਫਾ 14 ਤੋਂ ਚਲਦਾ.....

ਦੀਨ ਦਆਿਲ ਉਸ ਪਰਮ ਕ੍ਰਿਪਾਲ ਅੱਗੇ, ਰੋ-ਰੋ ਅਪਣਾ ਹਾਲ ਸੁਣਾਇਆ ਈ।
ਆਖੇ ਬਾਝ ਫਲੋਂ ਮੇਰੇ ਬੂਟੜੇ ਨੂੰ, ਕਾਹਨੂੰ ਬਾਗ ਜਹਾਨ ਤੇ ਲਾਇਆ ਈ।
ਸ਼ੋਕਵਾਨ ਮੈਂ ਰਿਹਾ ਸੰਤਾਨ ਬਾਝੋਂ, ਮੇਰੇ ਵੱਲ ਧਿਆਨ ਨ ਆਇਆ ਈ।
ਅੱਵਲ ਰੱਨ ਈਮਾਨ ਗੁਜ਼ਰਾਨ ਦੌਲਤ, ਤੀਜਾ ਪੁੱਤ ਨਿਸ਼ਾਨ ਬਨਾਇਆ ਈ।
ਪੁੱਤਰ ਬਾਝ ਉਧਾਰ ਨ ਪਿਤਾ ਦਾ ਏ, ਪੁੱਤਰ ਹੁੰਦਿਆਂ ਬਾਪ ਕਹਾਇਆ ਈ।
ਪੁੱਤ ਪੰਖ ਪੰਖੇਰੂਆਂ ਵਾਂਗ ਮਾਪੇ, ਪਰਾਂ ਬਾਝ ਕਿਸ ਉੱਡਣਾ ਚਾਹਿਆ ਈ।
ਦੁਖ ਸੁਖਾਂ ਦੇ ਵੇਲੜੇ ਯਾਰ ਪੁੱਤਰ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਿਰੇ ਤੇ ਹੁਕਮ ਵਜਾਇਆ ਈ।
ਹਿੱਸਾ ਬਾਪ ਦੇ ਜਿਸਮ ਦਾ ਪੁੱਤ ਹੁੰਦਾ, ਭਾਗੀ ਪੁੱਨ ਤੇ ਪਾਪ ਠਹਰਾਇਆ ਈ।
ਦਿੱਤਾ ਪੁੱਤ ਦਾ ਲਗਦਾ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ, ਪਿਛੇ ਮੋਇਆਂ ਸੰਕਲਪ ਕਰਾਇਆ ਈ।
ਇਨ੍ਹਾਂ ਪੁੱਤਾਂ ਨਾਲ ਸਭ ਗਤੀ ਹੁੰਦੀ, ਇਨ੍ਹਾਂ ਪੁੱਤਾਂ ਸੁਰਗ ਪਹੁੰਚਾਇਆ ਈ।
ਪੁੱਤ ਰਾਜ ਬਹਾਂਵਦੇ ਮਾਪਿਆਂ ਨੂੰ, ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਦਾ ਜਸ ਵਧਾਇਆ ਈ।
ਇਤਨੀ ਬੇਨਤੀ ਆਖ ਸਲਵਾਨ ਰਾਜੇ, ਪਾਸਾ ਨੀਂਦ ਦੇ ਵਿੱਚ ਪਰਤਾਇਆ ਈ।
ਭੇਖੇ ਬਾਲ ਇਕ ਮੂਰਤੀ ਜੋਗੀਆਂ ਦੀ, ਰਾਨੀ ਇੱਛਰਾਂ ਗੋਦ ਬਹਾਇਆ ਈ।
ਫਲ ਮੰਗ ਦਰਗਾਹ ਤੋਂ ਲਿਆ ਰਾਜੇ, ਦਿਲ ਦਾ ਦੁਖ ਸੰਤਾਪ ਮਿਟਾਇਆ ਈ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਜਿਸ ਵੇਲੜੇ ਜਾਗ ਆਈ, ਮਾਇਆ ਰਾਮ ਦੀ ਫਿਰ ਭੁਲਾਇਆ ਈ।

ਚਲਦਾ.....

सत्संग सूचनाएं

02 अक्तूबर दिन रविवार : प्रवचन :- स्वामी श्री विशेषानंद जी। स्थान : मकान न० E-10/6755 गली न०-9, 33 फुटी सड़क, न्यु आज़ाद नगर बहादुर के रोड़, नज़दीक दाना मंडी लुधियाणा।

समय : प्रात: 11 से 01 तक। **प्रार्थी : सुरेश कुमार।**

सम्पर्क- 9417359221—9464561879